



प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर में 12वां और 13वां संयुक्त दीक्षांत समारोह

माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान जी इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे

भुवनेश्वर, 28 दिसंबर 2024: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने 28 दिसंबर 2024 को अपना 12वां और 13वां संयुक्त दीक्षांत समारोह आयोजित किया है। श्री धर्मेंद्र प्रधान, माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री, भारत सरकार। भारत के मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर उपस्थित हुए और दीक्षांत भाषण दिया। प्रो. अजय कुमार सूद, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, सरकार। भारत का; डॉ. अजीत कुमार मोहंती, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग और सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग, सरकार। भारत सरकार और प्रोफेसर अभय करंदीकर, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार। भारत के सम्मानित अतिथि थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (बीओजी), आईआईटी भुवनेश्वर ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की। आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रोफेसर श्रीपाद कर्मलकर ने दीक्षांत समारोह की रिपोर्ट प्रस्तुत की और छात्रों को डिग्री प्रदान की।

इस दीक्षांत समारोह के दौरान, संस्थान ने शैक्षणिक वर्ष 2022-23 और 2023-24 के लिए 1388 छात्रों को डिग्री प्रदान की। इन छात्रों में से 8% पीएचडी, 19% एम.टेक, 14% एम.एससी, 14% दोहरी डिग्री (बी.टेक और एम.टेक) और 45% बी.टेक हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए, माननीय मंत्री श्री प्रधान ने कहा: "आईआईटी भुवनेश्वर को ज्ञान, अनुसंधान और नवाचार का संस्थान बनने का प्रयास करना चाहिए। स्नातकों को नौकरी चाहने वाले के बजाय नौकरी निर्माता बनने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। उन्हें औद्योगिक क्रांति 4.0 में योगदानकर्ता बनने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों और संकाय सदस्यों को उद्यमिता के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण और योग्यता को फिर से परिभाषित करने की दिशा में काम करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि देश के अनुसंधान को अकादमिक प्रकाशनों से आगे बढ़ना चाहिए और नवाचार और उद्यमशीलता कौशल के मामले में वैश्विक मानक हासिल करना चाहिए। उन्होंने कहा, "आईआईटी भुवनेश्वर और उसके छात्रों को 2036 तक ओडिशा और 2047 तक देश की विकास प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए स्टार्ट-अप और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने की दिशा में काम करना चाहिए।"

अपने संबोधन में प्रो. अजय कुमार सूद ने कहा कि विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने के लिए अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से ज्ञान सृजन पर जोर दिया गया। शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोगात्मक साझेदारी, बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना, अभूतपूर्व अनुसंधान और अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे में वित्त पोषण और निवेश और एक कुशल और विविध कार्यबल अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए जरूरी हैं। उन्होंने अनुसंधान रिसर्च फाउंडेशन और उसके उद्देश्य का उल्लेख किया।

डॉ. अजीत कुमार मोहंती ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग के युग में भी मानव ज्ञान और मानव क्षमता अपूरणीय है। उन्होंने कहा कि देश के युवाओं में नवप्रवर्तन की क्षमता है और उन्हें इस शक्ति का उपयोग देश के विकास में करना चाहिए।

सभा को संबोधित करते हुए, प्रोफेसर अभय करंदीकर ने अत्याधुनिक अनुसंधान और नवाचार का केंद्र बनने के लिए आईआईटी भुवनेश्वर की सराहना की। उन्होंने कहा कि एक ओर जहां देश ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाकर वैश्विक मानचित्र पर अपनी पहचान बनाई है। भारत दुनिया में स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के मामले में तीसरा सबसे

बड़ा देश बन गया है जो देश के नवाचार और उद्यमशीलता कौशल को प्रदर्शित करता है। देश के युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए और भारत को अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में योगदान देना चाहिए।

इस अवसर पर बोलते हुए, आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपद कर्माकर ने आईआईटी भुवनेश्वर के विभिन्न प्रयासों और उपलब्धियों पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा, “वर्ष 2008 में अपनी स्थापना के बाद से, आईआईटी भुवनेश्वर ने एक लंबा सफर तय किया है। हाल के वर्षों में, इसने विकसित भारत@2047 विजन की दिशा में एनईपी 2020 पहल के साथ खुद को जोड़ा है। हम इस आदर्श वाक्य के साथ काम कर रहे हैं: किसी का अनुसरण न करें, लेकिन सभी से सीखें, और इसे स्वीकार भी करें। किसी का अनुसरण न करने का मतलब है मौलिक बनें, सभी से सीखें, इसका मतलब है प्रतिक्रिया और आलोचना के लिए खुले रहें, और इसे भी स्वीकार करें - इसका मतलब है कि अपनी उपलब्धियों में दूसरों के योगदान को विधिवत स्वीकार करें।” उन्होंने अनुसंधान, शिक्षा और उद्यमिता में उत्कृष्टता की दिशा में आईआईटी भुवनेश्वर की यात्रा के प्रमुख मील के पत्थर साझा किए।

बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (बीओजी) के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह ने छात्रों को प्रेरित किया और कहा कि अपनी अत्याधुनिक सुविधाओं और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, संस्थान स्नातकों को स्थिरता और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखते हुए परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों में नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाता है।

दीक्षांत समारोह के बाद, माननीय मंत्री ने सिलिकॉन कार्बाइड पर अभूतपूर्व उद्योग-अकादमिक अनुसंधान और नवाचार केंद्र का दौरा किया और सेमीकंडक्टर शोधकर्ताओं के साथ बातचीत की। उन्होंने अनुसंधान और उद्यमिता पार्क का भी दौरा किया और आईआईटी भुवनेश्वर के तहत शुरू किए गए स्टार्ट-अप के साथ बातचीत की।

इस दीक्षांत समारोह के दौरान, संस्थान ने 1388 छात्रों को डिग्री प्रदान की, जिनमें से 105 पीएचडी, 269 एम.टेक, 197 एमएससी, 192 दोहरी डिग्री (बी.टेक और एम.टेक), और 625 शैक्षणिक वर्ष 2022 के लिए बी.टेक. -23 और 2023-24. यह स्नातक छात्रों, उनके माता-पिता, संकाय सदस्यों और स्टाफ सदस्यों और संस्थान के प्रशासन के लिए गर्व का क्षण था।

वर्ष 2022-23 के लिए, सभी बी.टेक छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के श्री हर्ष सिंह जादोन को भारत के राष्ट्रपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। वर्ष 2023-24 के लिए, भारत का राष्ट्रपति स्वर्ण पदक कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग के श्री अर्णव कुमार बेहरा को प्रदान किया गया।

आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, एएनआरएफ और आईआईटी भुवनेश्वर द्वारा भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रोफेसर अजय कुमार सूद और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर के साथ “भारत में अनुसंधान के भविष्य के लिए रास्ते और संभावनाओं की खोज” विषय पर एक संवाद बैठक का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। गणमान्य व्यक्तियों ने ओडिशा के विभिन्न संस्थानों के संकाय सदस्यों, डीन और कुलपतियों के प्रश्नों के उत्तर दिए।
